Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAR-APR 2023, VOL- 10/76

चित्रकूट प्रकल्प के संदर्भ में सामाजिक सशक्तिकरण का प्रभाव

शिव सिंह बघेल[1], Ph.D. & अंकित कुमार पाण्डेय[2]

[1]सहायक प्रोफेसर (वर्धा समाज कार्य संस्थान) महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा महाराष्ट्र ईमेल- *baghelshiv83@gmail.com*

[2]पीएच-डी. शोधार्थी (वर्धा समाज कार्य संस्थान) महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा महाराष्ट्र ईमेल- *ankitpandey88023@gmail.com*

Paper Received On: 21 APRIL 2023
Peer Reviewed On: 30 APRIL 2023
Published On: 01 MAY 2023

Abstract

नानाजी देशमुख की संकल्पना के आधार पर दीनदयाल शोध संस्थान चित्रकूट परिक्षेत्र के ग्रामीण अंचल में विभिन्न अनुप्रयोगों के माध्यम से सामाजिक सशक्तिकरण हेतु प्रयासरत है। संस्थान पिछले 30 वर्षों से निरंतर इस क्षेत्र में ग्रामीण विकास के जो सूत्र नानाजी देशमुख ने प्रदान किए- शिक्षा, स्वावलंबन, स्वास्थ्य एवं सदाचार। इन्हीं को आधार बनाकर लोगों को सशक्त बनाने हेतु विभिन्न कार्य क्रियान्वित कर रहा है। चित्रकूट प्रकल्प दीनदयाल शोध संस्थान की सबसे बड़ी और महत्वकांक्षी परियोजना है जिसकी सराहना देशभर में हुई है तथा भारत सरकार एवं विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा भी चित्रकूट प्रकल्प के ग्रामीण विकास संबंधी प्रयोगों का अध्ययन कर योजनाओं एवं कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण विकास हेतु प्रतिरूपित करने का कार्य किया गया है। संस्थान चित्रकूट परिधि के ग्रामीण अंचल में विविध प्रकार के शैक्षणिक, रोजगरपरक, स्वास्थ्य एवं आचार व्यवहार से संबंधित अनेक कार्य कर रहा है। संस्थान ने चित्रकूट प्रकल्प में अनेक विद्यालय, चिकित्सालय व रोजगरपरक प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना की है। साथ ही कृषि क्षेत्र के विकास हेतु दो कृषि विज्ञान केंद्र संस्थान द्वारा संचालित किए जा रहे हैं जहां किसानों को उनकी कृषि संबंधी समस्याओं का निवारण तथा उन्नत खाद, बीज एवं नस्ल के दुधारू पशुओं से संबंधित अनेक आवश्यक जानकारियां प्रदान की जाति हैं। इस प्रकार संस्थान ने सामाजिक सशक्तिकरण हेतु विभिन्न कार्यों के माध्यम से अभिनव प्रयास किए हैं। उक्त शोध पत्र दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा चित्रकूट प्रकल्प में सामाजिक सशक्तिकरण के प्रभाव को प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द – दीनदयाल शोध संस्थान, चित्रकूट प्रकल्प, सामाजिक सशक्तिकरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन, सदाचार।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रस्तावना

सामाजिक सशक्तिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा समाज के प्रत्येक व्यक्ति के अंदर आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास एवं सामूहिक जीवन पद्धति के प्रति संवेदन शीलता पैदा की जाती है। इस प्रक्रिया में समाज में रहने वाले व्यक्तियों के अंतर-संबंधो को सक्षम एवं सर्जनात्मक रूप प्रदान किया जाता है। इन सभी प्रयासों का मुख्य लक्ष्य सामाजिक संस्थाओं को मजबूत एवं संगठित बनाकर समाज में पाई जाने वाली गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी एवं अज्ञानता जैसी बिमारियों को खत्म किया जाता है। संक्षेप में कहें तो सामाजिक सशक्तिकरण के द्वारा समाज में पाय जाने वाले लोगों को आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक एवं मनोविज्ञान स्तर पर सुधार कर के उनके जीवन में रचनात्मक परिवर्तन लाया जाता है। समाज में प्रत्येक व्यक्ति अपने मान-सम्मान एवं सामाजिक संबंधों के क्रियान्वयन में स्वैच्छिक एवं स्वनिर्णय में स्वतंत्र हो तो यह उसका सामाजिक सशक्तिकरण कहलाता है। विविध संबंधों का एक तंत्रनूमा जाल होता है, जिसमें व्यक्ति की समाजिक प्रस्थिति के अनुसार भूमिका तय होती है। जब यह भूमिका व्यक्ति द्वारा बगैर किसी बाहरी दबाव के तैय की जाती है, तो इसे सामाजिक स्वावलंबन कहा जाता है। उदाहरण के तौर पर कोई व्यक्ति अपने जीवन में किससे विचार विमर्श या मित्रता का संबंध रखेगा और किससे नहीं यदि यह निर्णय वह स्वयं के स्तर पर करने में स्वतंत्र है, तो इसे सामाजिक स्वावलंबन के रूप में जाना जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में नानाजी देशमुख द्वारा स्थापित दीनदयाल शोध संस्थान के चित्रकूट प्रकल्प में सामाजिक सशक्तिकरण हेतु किए गए कार्यों का प्रभाव लाभार्थियों में क्या रहा है? सारगर्भित अध्ययन विदित है।

उद्देश्य

दीनदयाल शोध संस्थान, चित्रकूट प्रकल्प के अंतर्गत लाभार्थियों में सामाजिक सशक्तिकरण हेतु किए गए कार्यों का अध्ययन किया गया है।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शोध प्रविधि

संदर्भित शोध पत्र दीनदयाल शोध संस्थान, चित्रकूट प्रकल्प के आलोक में सामाजिक सशक्तिकरण संबंधी किए गए कार्यों के अध्ययन से संबंधित है। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन में वर्णात्मक शोध प्रारूप का प्रयोग मूल्यांकनात्मक अध्ययन दृष्टि से जाँच परख करने हेतु किया गया है। साथ ही शोध प्रविधि मात्रात्मक स्त्रोतों पर आधारित है। जिसके अंतर्गत स्वनिर्मित संरचित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग कर प्राथमिक तथ्यों का संकलन किया गया है। जिसके अंतर्गत सामाजिक सशक्तिकरण के विविध उप चरों की पहचान कर उनके गहन अध्ययन पर केंद्रित है। अध्ययन में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा चित्रकूट प्रकल्प के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों का प्रभाव सामाजिक सशक्तिकरण में क्या रहा है और संबंधित कार्यों की उपयोगिता क्या है यह भी तलाशा गया है, ताकि गहन अध्ययन किया जा सके।

प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण

सामाजिक सशक्तिकरण की इस उपयोगिता को समझते हुए सामाजिक सशक्तिकरण को कुल सशक्तिकरण में एक प्राचल (पैरामीटर) के रूप में अपनाया गया है। कुल सामाजिक सशक्तिकरण संबंधी अनुमापन तंत्र की निर्मिति विशिष्ट रूप से की गई है। जिसमें सामाजिक सशक्तिकरण के कुल 23 उप प्राचल निर्मित किए गए हैं। यह उप प्राचल सामाजिक सशक्तिकरण के स्वरूप को पूरी तरह से दर्शाने वाले थे। प्रत्येक उप प्राचल को उसकी योग्य महत्ता के अनुसार तीन में से अंक (जितना उप प्राचल उच्च उतने ज्यादा अंक) प्रदान किए गए हैं। ऐसे सभी उप प्राचलों से प्राप्त अंकों का सकल कर प्रस्तुत शोध पत्र में दीनदयाल शोध संस्थान से लाभान्वित लाभार्थियों के कुल सामाजिक सशक्तिकरण के स्तर को जाँचा गया है। साथ ही प्राप्त तथ्यों को सरल ढंग से समझने हेतु माध्य एवं मानक विचलन सांख्यिकीय परीक्षण का प्रयोग भी किया गया है। प्रस्तुत आरेख कुल सामाजिक सशक्तिकरण को दर्शाता है, वहीं सारणी सामाजिक सशक्तिकरण के विविध आयामों को दर्शाती है।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आरेख : कुल सामाजिक सशक्तिकरण

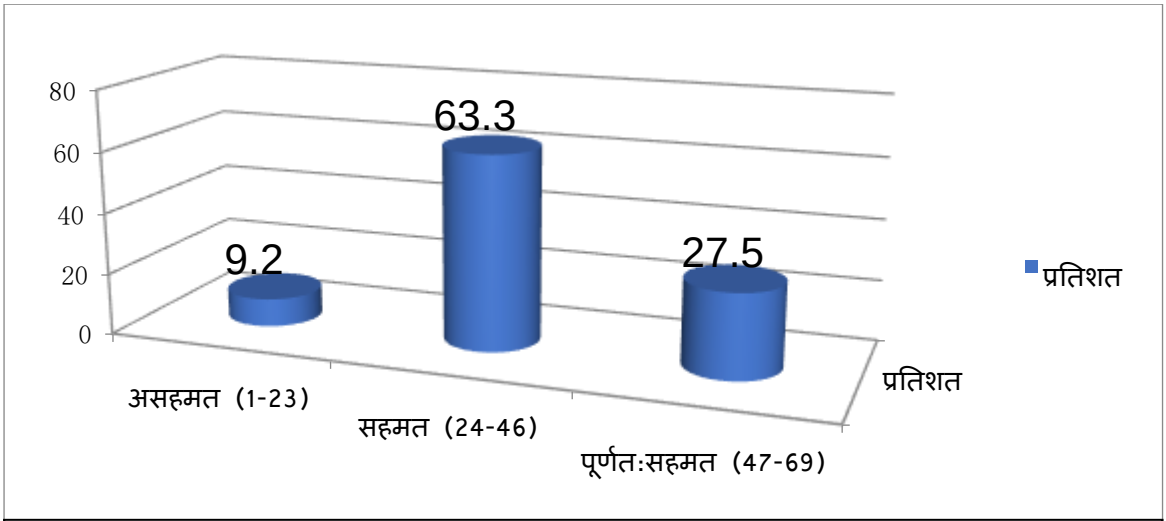

माध्य 47.8167 मानक विचलन 6.22273

उपर्युक्त आरेख में प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से यह सामने आता है कि दीनदयाल शोध संस्थान से संबंधित सर्वाधिक 63.3 प्रतिशत लाभार्थी सशक्तिकरण संबंधित कुल सामाजिक सशक्तिकरण से सहमत हैं। ततपश्चात् 27.5 प्रतिशत लाभार्थी पूर्णत: सहमत हैं, वहीं इनके विपरीत 9.2 प्रतिशत लाभार्थी असहमत हैं। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि 90.0 प्रतिशत के लगभग लाभार्थी यह मानते हैं कि दीनदयाल शोध संस्थान से जुड़ने के पश्चात् सामाजिक सशक्तिकरण मध्यम या अधिक मात्रा में आया है अर्थात दस में से नौ लाभार्थी सामाजिक सशक्तिकरण को तीन में से दो या उससे अधिक अंक दे रहे हैं। दीनदयाल शोध संस्थान से संबंधित लाभार्थियों का कुल सामाजिक सशक्तिकरण का माध्य 47.8167 है, जबकि मानक विचलन 6.22273 है। संबंधित परिणामों के सांख्यिकीय परिक्षण से स्पष्ट होता है कि कुल सामाजिक सशक्तिकरण औसतन 47.8167 (± 6.22273) है, जो यह दर्शाता है कि 69 अंको में से औसतन 47 अंक प्राप्त हो रहे है। प्राप्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि 1 से 23 अंक निम्न स्तर को, जबकि 24 से 46 अंक मध्यम स्तर को, वहीं 47 से 69 अंक उच्च स्तर को प्रदर्शित करते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा सामाजिक रूप से सशक्त बनाने

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

के लिए जो कार्य किए गए हैं उन्हें औसतन 47 अंक प्राप्त हो रहे हैं, जो यह स्पष्ट करते हैं कि मध्य स्थिति को प्राप्त कर लिया है तथा उच्च स्थिति की ओर अग्रसर है।

उपर्युक्त तथ्यों के परिणामों के विश्लेषण से यह सामने आता है कि दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा सशक्तिकरण हेतु किए जा रहे कार्यों से अध्ययन क्षेत्र के लोग सामाजिक रूप से सशक्त बने हैं। साथ ही एक प्रमुख तथ्य यह सामने आता है कि सर्वाधिक लाभार्थी यह मानते हैं कि कुल सामाजिक सशक्तिकरण से हम सहमत है अर्थात तीन में से दो अंक प्रदान किए हैं, जिससे यह साफ होता है कि कुल सामाजिक सशक्तिकरण मध्यम मात्रा में है। वहीं एक बट्टा दसवाँ भाग ऐसा भी है जो इससे असहमत हैं। अगर ऐसे भाग की बात करे जो पूरी तरह से कुल सामाजिक सशक्तिकरण को प्राप्त कर चुका है, ऐसा मानने वाले लाभार्थियों की संख्या एक चौथाई है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों से लाभार्थी सामाजिक सशक्तिकरण की तरफ बढ़ रहे हैं।

सारणी : सामाजिक सशक्तिकरण के विविध आयाम

क्र.सं.	वक्तव्य	कोई प्रतिक्रिया नहीं	असहमत	सहमत	पूर्णत: सहमत	कुल
1	दीनदयाल शोध संस्थान के हस्तक्षेप से गाँव में निष्पक्ष अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में वृद्धि हुई है।	**2.5**	**7.5**	**50.0**	**40.0**	**100**
2	संस्थान के हस्तक्षेप से वर्ग के अधार पर भेद भाव कम हुआ है।	**0**	**8.3**	**47.5**	**44.2**	**100**
3	संस्थान के हस्तक्षेप से सामाजिक समितियों एवं संगठनों में भागीदारी बढ़ी है।	**.8**	**5.0**	**59.2**	**35.0**	**100**
4	संस्थान के हस्तक्षेप से सामाजिक जीवन स्तर में वृद्धि हुई है।	**0**	**1.7**	**68.3**	**30.0**	**100**

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

5	संस्थान के हस्तक्षेप से वर्तमान चुनौतियों से सामना करने में समर्थ हुए हैं।	**0**	**5.0**	**78.3**	**16.7**	**100**
6	संस्थान के हस्तक्षेप से सांस्कृतिक कार्यक्रमों में वृद्धि हुई है।	**0**	**3.3**	**45.8**	**50.0**	**100**
7	संस्थान के हस्तक्षेप से अपनी संस्कृति के प्रति लगाव में वृद्धि हुई है।	**.8**	**2.5**	**49.2**	**47.5**	**100**
8	संस्थान के हस्तक्षेप से समन्वय की भावना बढ़ी है।	**0**	**6.7**	**68.3**	**25.0**	**100**
9	संस्थान के हस्तक्षेप से गाँव में उत्पीडन, शोषण, आदि में कमी आयी है।	**0**	**14.2**	**64.2**	**21.7**	**100**
10	संस्थान के हस्तक्षेप से ग्रामीण संरचना की स्थिति बेहतर हुई है।	**0**	**5.8**	**77.5**	**16.7**	**100**
11	संस्थान के हस्तक्षेप से रूढ़िवादी परम्पराओं में कमी आयी है।	**0**	**2.5**	**67.5**	**30.0**	**100**
12	संस्थान के हस्तक्षेप से अशिक्षा का निर्मूलन हुआ है।	**.8**	**2.5**	**66.7**	**30.0**	**100**
13	संस्थान के हस्तक्षेप से लड़कियों के शिक्षा में वृद्धि हुई है।	**0**	**7.5**	**60.8**	**31.7**	**100**
14	संस्थान के हस्तक्षेप से बाल विवाह कम हुए हैं।	**0**	**5.0**	**56.7**	**38.3**	**100**
15	संस्थान के हस्तक्षेप से जेंडर समानता में वृद्धि हुई है।	**0**	**21.7**	**61.7**	**16.7**	**100**
16	संस्थान के हस्तक्षेप से दहेज़ प्रथा में कमी हुई है।	**0**	**36.7**	**47.5**	**15.8**	**100**

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

17	संस्थान के हस्तक्षेप से जातिवाद, सम्प्रदायवाद में कमी आयी है।	**0**	**17.5**	**68.3**	**14.2**	**100**
18	संस्थान के हस्तक्षेप से भेदभाव-मुक्त परस्पर-पूरकता का जीवन अपनाने में वृद्धि हुई है।	**1.7**	**2.5**	**72.5**	**23.3**	**100**
19	संस्थान के हस्तक्षेप से स्वास्थ्य की सुविधाओं में वृद्धि हुई है।	**.8**	**18.3**	**62.5**	**18.3**	**100**
20	संस्थान के हस्तक्षेप से सरकारी योजनाओं, कार्यक्रमों के बारे में जानकारी में वृद्धि हुई है।	**0**	**4.2**	**70.0**	**25.8**	**100**
21	संस्थान के हस्तक्षेप से ग्राम-पंचायत स्तर के कार्यक्रमों में लोगों की भागीदारी में वृद्धि हुई है।	**0**	**2.5**	**73.3**	**24.2**	**100**
22	संस्थान के हस्तक्षेप से राजनैतिक प्रक्रिया में सुधार आया है।	**.8**	**9.2**	**71.7**	**18.3**	**100**
23	संस्थान के हस्तक्षेप से सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन शैली में नए दृष्टिकोण में वृद्धि हुई है।	**3.3**	**5.8**	**68.3**	**22.5**	**100**

1. सारणी के पहले पहलू "दीनदयाल शोध संस्थान के हस्तक्षेप से गाँव में निष्पक्ष अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में वृद्धि हुई है" में प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से यह सामने आता है कि आधे 50.0 प्रतिशत लाभार्थी संबंधित पहलू से सहमत हैं। ततपश्चात् 40.0 प्रतिशत लाभार्थी पूर्णत: सहमत हैं, जबकि 7.5 प्रतिशत लाभार्थी असहमत हैं तथा शेष 2.5 प्रतिशत ने कोई प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त की है। प्राप्त तथ्यों के परिणामों से यह स्पष्ट होता

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

है कि दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा चित्रकूट ग्रामीण अंचल के विकास हेतु किए जा रहे कार्यों से गाँवों में निष्पक्ष अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में बदलाव आया है। साथ ही यह तथ्य स्पष्ट करते हैं कि तकरीबन 90 प्रतिशत लाभार्थी संबंधित पहलू को 3 अंको में से 2 या उससे अधिक अंक प्रदान कर रहे है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि दीनदयाल शोध संस्थान से संबंधित पहलू मजबूत स्थिति की ओर अग्रसर है।

2. सारणी के दूसरे पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से वर्ग के अधार पर भेद भाव कम हुआ है" में प्राप्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 47.5 प्रतिशत लाभार्थी इस पहलू से सहमत हैं। तदोपरांत 44.2 प्रतिशत लाभार्थी पूर्णत: सहमत हैं, वहीं इनके विपरीत 8.3 प्रतिशत लाभार्थी असहमत हैं। प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि 90.0 प्रतिशत से ज्यादा लाभार्थियों ने दीनदयाल शोध संस्थान को वर्ग के अधार पर भेद भाव कम करने हेतु 3 अंको में से 2 या उससे अधिक अंक दिए हैं। प्राप्त तथ्यों के विवेचना के आधार पर स्पष्ट हो रहा है कि दीनदयाल शोध संस्थान चित्रकूट प्रकल्प के ग्रामीण अंचल में वर्ग के आधार पर भेदभाव समाप्त करने में सफल हो रहा है। साथ ही यह स्पष्ट हो रहा है कि सामाजिक सशक्तिकरण से संबंधित यह पहलू मजबूत स्थिति की ओर अग्रसर हैं।

3. सारणी के तीसरे पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से सामाजिक समितियों एवं संगठनों में भागीदारी बढ़ी है" में प्राप्त आंकड़ों के अनुसार यह सामने आता है कि सर्वाधिक 59.2 प्रतिशत लाभार्थी उपर्युक्त पहलू से सहमत हैं। इसके उपरांत 35.0 प्रतिशत पूर्णत: सहमत हैं, जबकि 5.0 प्रतिशत लाभार्थी असहमत हैं तथा शेष 0.8 प्रतिशत ने कोई प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त की। संबंधित तथ्यों के परिणामों से यह स्पष्ट हो रहा है कि दीनदयाल शोध संस्थान से जुड़ने के पश्चात् लाभार्थियों में सामाजिक समितियों एवं संगठनों के प्रति सक्रियता बढ़ी है तथा अब ज्यादातर लोग समितियों एवं संगठनों में भागीदारी करते हैं। संबंधित पहलू भी मजबूत स्थिति की ओर अग्रसर है।

4. सारणी के चौथे पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से सामाजिक जीवन स्तर में वृद्धि हुई है" में प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से यह निकल कर आता है कि सर्वाधिक 68.3 प्रतिशत

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

लाभार्थी संबंधित पहलू से सहमत हैं, वहीं 30.0 प्रतिशत लाभार्थी पूर्णत: सहमत हैं, जबकि शेष मात्र 1.7 प्रतिशत लाभार्थी असहमत हैं। प्राप्त तथ्य साफ दर्शाते हैं कि दीनदयाल शोध संस्थान के कार्यों के पश्चात् लोगों के सामाजिक जीवन स्तर में सुधार आया है। साथ ही यह स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक लाभार्थी 3 अंकों में से 2 अंक प्रदान किए हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि मध्यम स्तर का सुधार आया है। वहीं तकरीबन एक तिहाई के आसपास लाभार्थी ही यह मानते हैं कि सामाजिक जीवन में पूर्णत: सुधार आ गया है। इस प्रकार स्पष्ट हो रहा है कि संस्थान के कार्यों से सामाजिक जीवन स्तर में सुधार हो।

5. सारणी के पांचवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से वर्तमान चुनौतियों का सामना करने में समर्थ हुए हैं" में प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 78.3 प्रतिशत लाभार्थी इस पहलू से सहमत हैं। ततपश्चात् 16.7 प्रतिशत पूर्णत: सहमत हैं, जबकि मात्र 5.0 प्रतिशत लाभार्थी असहमत हैं। प्राप्त तथ्यों के परिणामों से यह स्पष्ट हो रहा है कि दीनदयाल शोध संस्थान से जुड़ने के पश्चात् लाभार्थी वर्तमान चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बने हैं, लेकिन प्राप्त तथ्यों से यह भी स्पष्ट होता है कि अधिकतर लाभार्थियों ने 3 अंको में से 2 प्रदान किए हैं, जिससे स्पष्ट होता है कि वर्तमान चुनौतियों का सामना करने की प्रक्रिया में अग्रसर हैं, लेकिन अभी पूर्णत: सक्षम नहीं बने हैं।

6. सारणी के छठे पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से सांस्कृतिक कार्यक्रमों में वृद्धि हुई है" में प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि आधे 50.0 प्रतिशत लाभार्थी संबंधित पहलू से पूर्णत: सहमत हैं। ततपश्चात् 45.8 प्रतिशत सहमत हैं, जबकि 3.3 प्रतिशत असहमत हैं। संबंधित तथ्यों के परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि दीनदयाल शोध संस्थान ने जब से अध्ययन क्षेत्र में कार्य करना प्रारंभ किया है उसके पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रमों में वृद्धि हुई है। साथ ही तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि तकरीबन हर दूसरा व्यक्ति 3 में से 3 अंक दे रहा है, वहीं इसके पश्चात् 3.3 प्रतिशत लाभार्थियों को छोडकर शेष 3 में से 2 अंक दे

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

रहे हैं। इस तरह स्पष्ट होता है कि दीनदयाल शोध संस्थान के सहयोग से सांस्कृतिक कार्यक्रमों में काफी ज्यादा वृद्धि हुई है।

7. सारणी के सातवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से अपनी संस्कृति के प्रति लगाव में वृद्धि हुई है" में प्राप्त तथ्यों से यह सामने आता है कि सर्वाधिक 49.2 प्रतिशत लाभार्थी इस पहलू से सहमत हैं। ततपश्चात् 47.5 प्रतिशत पूर्णत: सहमत हैं, जबकि 2.5 प्रतिशत असहमत हैं तथा शेष बचे 0.8 प्रतिशत ने कोई प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त की। प्राप्त परिणाम साफ दर्शाते हैं कि यह पहलू मजबूत हुआ है। दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों से लोगो का अपनी संस्कृति के प्रति लगाव बढ़ रहा है, प्राप्त परिणामों के परीक्षण से स्पष्ट हो रहा है।

8. सारणी के आठवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से समन्वय की भावना बढ़ी है" में प्राप्त तथ्यों से यह सामने आता है कि सर्वाधिक 68.3 प्रतिशत लाभार्थी इससे सहमत हैं। इसके उपरांत 25.0 प्रतिशत लाभार्थी पूर्णत: सहमत हैं, जबकि 6.7 प्रतिशत असहमत हैं। प्राप्त तथ्यों से यह पता चलता है कि दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों से लोगों में समन्वय की भावना बढ़ रही है। यदि इस बात पर विचार करें की कितनी बढ़ी है तो प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक लाभार्थी यह मानते हैं कि समन्वय की भावना बढ़ी है अर्थात 3 में से 2 अंक प्रदान किए हैं जो मध्य स्तर को दर्शाता है। वहीं एक चौथाई लाभार्थी यह मानते हैं कि पूर्णत: समन्वय की भावना आ गई है अर्थात 3 में से 3 अंक दिए हैं। इस प्रकार इन तथ्यों से स्पष्ट होता है कि दीनदयाल शोध संस्थान के कार्यों के बदौलत लोगों में समन्वय की भावना बढ़ी है।

9. सारणी के नवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से गाँव में उत्पीड़न, शोषण, आदि में कमी आयी है" में प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 64.2 प्रतिशत लोग इस पहलू से सहमत हैं, वहीं 21.7 प्रतिशत पूर्णत: सहमत हैं, जबकि 14.2 प्रतिशत असहमत हैं। प्राप्त तथ्यों के परिणाम साफ दर्शाते हैं कि दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों से गाँव में उत्पीडन, शोषण आदि में कमी आयी है। साथ ही प्राप्त तथ्यों के विवेचना से स्पष्ट

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

होता है कि संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों के कारण गाँवों में उत्पीडन एवं शोषण आदि समाप्ति की ओर अग्रसर है।

10. सारणी के दसवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से ग्रामीण संरचना की स्थिति बेहतर हुई है" में प्राप्त तथ्यों से यह स्पष्ट हो रहा है कि सर्वाधिक 77.5 प्रतिशत लाभार्थी इस पहलू से सहमत हैं, जबकि 16.7 प्रतिशत पूर्णत: सहमत हैं, वहीं 5.8 प्रतिशत असहमत हैं। प्राप्त परिणाम साफ दर्शाते हैं कि दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों से ग्रामीण संरचना की स्थिति में बदलाव आया है। साथ ही तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश लाभार्थी संस्थान को 3 अंको में से 2 अंक प्रदान किए हैं जो मध्यम स्तर की स्थिति को दर्शाता है। इस प्रकार स्पष्ट हो रहा है कि संस्थान के कार्यों से ग्रामीण संरचना की स्थिति बेहतर हुई है।

11. सारणी के ग्यारहवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से रूढ़िवादी परम्पराओं में कमी आयी है" में प्राप्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 67.5 प्रतिशत लाभार्थी इस पहलू से सहमत हैं, जबकि 30.0 प्रतिशत पूर्णत: सहमत हैं, वहीं मात्र 2.3 प्रतिशत लाभार्थी असहमत हैं। प्राप्त तथ्यों से साफ स्पष्ट होता है कि दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों से रूढ़िवादी परम्पराएँ समाप्ति की तरफ बढ़ रही हैं। साथ ही यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश लाभार्थी संबंधित पहलू को 3 अंको में से 2 या उससे अधिक अंक दिए है। जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि रूढ़िवादी परम्पराएं समाप्ति के करीब दिख रही हैं तथा स्पष्ट होता है कि संबंधित पहलू मजबूत स्थिति की ओर बढ़ रहा है।

12. सारणी के बारहवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से अशिक्षा का निर्मूलन हुआ है" में प्राप्त तथ्यों से सामने आता है कि तकरीबन 66.7 प्रतिशत लाभार्थी इससे सहमत हैं। ततपश्चात् 30.0 प्रतिशत पूर्णत: सहमत हैं, जबकि 2.5 प्रतिशत असहमत हैं तथा शेष बचे 0.8 प्रतिशत ने कोई प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त की। प्राप्त परिणाम स्पष्ट करते हैं दीनदयाल शोध संस्थान कार्यों के परिणाम स्वरूप शिक्षा के स्तर में सुधार आया है तथा संबंधित पहलू मजबूत स्थिति की तरफ अग्रसर है।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

13. सारणी के तेरहवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से लड़कियों के शिक्षा में वृद्धि हुई है" में प्राप्त तथ्यों से यह सामने आता है कि सर्वाधिक 60.8 प्रतिशत लाभार्थी इस पहलू से सहमत हैं। ततपश्चात् 31.7 प्रतिशत पूर्णत: सहमत हैं, जबकि 7.5 प्रतिशत असहमत हैं। प्राप्त तथ्यों के आधार पर स्पष्ट होता है कि दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा अध्ययन क्षेत्र में लड़कियों की शिक्षा में सुधार लाने हेतु कारगर कदम उठाएं गए हैं। साथ ही तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि 90 प्रतिशत से अधिक लाभार्थियों ने संबंधित पहलू को 3 अंको में से 2 या उससे अधिक अंक प्रदान किए हैं, जो साफ दर्शाते है कि लड़कियों की शिक्षा के स्तर में सुधार हुआ है।

14. सारणी के चौदहवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से बाल विवाह कम हुए हैं" में प्राप्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 56.7 प्रतिशत लाभार्थी इससे सहमत हैं। ततपश्चात् 38.3 प्रतिशत पूर्णत: सहमत है, जबकि 5.0 प्रतिशत असहमत हैं। प्राप्त तथ्यों से यह स्पष्ट हो रहा है कि दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा किए गए कार्यों से बाल विवाह में कमी आयी है। लोग अब जागरूक हो रहे है और बाल विवाह को एक बुराई मानने लगे हैं। लेकिन प्राप्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि संस्थान के कार्यों से व्यापक बदलाव आया है, लेकिन बाल विवाह जैसी समस्या आज भी पूरी तरह से अध्ययन क्षेत्र में समाप्त नहीं हुई है। यह बात जरुर है कि वर्तमान में इसका औसत बहुत कम है, लेकिन एक भी विवाह का होना यह माना जाएगा की समस्या पूरी तरह से समाप्त नहीं हुई है।

15. सारणी के पंद्रहवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से जेंडर समानता में वृद्धि हुई है" में प्राप्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 61.7 प्रतिशत लाभार्थी संबंधित पहलू से सहमत हैं। इसके उपरांत 21.7 लाभार्थी असहमत हैं, जबकि 16.7 प्रतिशत पूर्णत: सहमत हैं। प्राप्त तथ्यों के परिणाम साफ दर्शाते हैं कि अधययन क्षेत्र में जेंडर समानता में बदलाव आया है। साथ ही तथ्य यह स्पष्ट करते हैं कि तीन चैथाई से ज्यादा लाभार्थी इस पहलू को 3 अंक में से 2 या उससे अधिक प्रदान किए हैं, जो बदलाव की स्थिति को दर्शाते

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

हैं। लेकिन यह मानना की पूरी तरह से बदलाव आ गया है, यह गलत होगा क्योंकि प्रस्तुत तथ्य मध्यम स्थिति को परिभाषित करते हैं।

16. सारणी के सोहलहवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से दहेज़ प्रथा में कमी हुई है" में प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से यह निकल कर आता है कि सर्वाधिक 47.5 प्रतिशत लाभार्थी इस पहलू से सहमत हैं, जबकि इसके विपरीत 36.7 प्रतिशत असहमत हैं, वहीं 15.8 प्रतिशत पूर्णत: सहमत हैं। प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि दहेज़ प्रथा एक कानूनी अपराध होने के बावजूद भी अध्ययन क्षेत्र में व्याप्त है। साथ ही यह स्पष्ट होता है कि दीनदयाल शोध संस्थान से जुड़ने के पश्चात् लाभार्थियों में दहेज़ लेने में कमी जरूर आयी है लेकिन संस्थान पूर्ण रूप से रोक पाने में असफल रहा है। यह जरुर सही है कि कुछ हद तक कामयाबी मिली है, परंतु यह कामयाबी अपर्याप्त है। यह पहलू मध्यम स्थिति के करीब पहुँच रहा है, जो यह भी स्पष्ट करता है कि संस्थान जो लक्ष्य प्राप्त करना चाहता है वह अभी दूर दिखाई दे रहा है।

17. सारणी के सत्रहवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से जातिवाद, सम्प्रदायवाद में कमी आयी है" में प्राप्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 68.3 प्रतिशत लाभार्थी संबंधित पहलू से सहमत हैं। तदोपरांत 17.5 प्रतिशत असहमत हैं, जबकि शेष 14.2 प्रतिशत पूर्णत: सहमत हैं। प्राप्त परिणाम यह साफ दर्शाते हैं कि दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों से जातिवाद, सम्प्रदायवाद में कमी आयी है। लेकिन यह पूर्ण रूप से अभी समाप्त नहीं हुआ है इस ओर संस्थान बढ़ता दिख रहा है।

18. सारणी के आठरहवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से भेदभाव-मुक्त परस्पर-पूरकता का जीवन अपनाने में वृद्धि हुई है" में प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 72.5 प्रतिशत लाभार्थी इस पहलू से सहमत हैं। ततपश्चात् 23.3 प्रतिशत इससे पूर्णत: सहमत हैं, जबकि 2.5 प्रतिशत असहमत हैं, वहीं शेष बचे 1.7 प्रतिशत ने कोई प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त की हैं। प्राप्त परिणाम इस ओर निर्दिष्ट कर रहे हैं कि दीनदयाल शोध संस्थान के कार्यों से भेदभाव-मुक्त परस्पर-पूरकता पूर्ण जीवन यापन करने की स्थिति में सुधार आया है।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

19. सारणी के उन्नीसवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से स्वास्थ्य की सुविधाओं में वृद्धि हुई है" में प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि 62.5 प्रतिशत लाभार्थी इस पहलू से सहमत हैं। ततपश्चात् 18.3 प्रतिशत असहमत हैं, जबकि इतने ही 18.3 पूर्णत: सहमत हैं, वहीं शेष 0.8 कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। प्राप्त तथ्यों के परिणामों से स्पष्ट होता है कि दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों के परिणाम स्वरूप अध्ययन क्षेत्र में स्वास्थ्य की सुविधाओं में वृद्धि हुई है। परंतु यह नहीं कहा जा सकता है कि पूरी तरह से सुधार आ गया है, क्योंकि 18.3 प्रतिशत इससे असहमत भी हैं।

20. सारणी के बीसवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से सरकारी योजनाओं, कार्यक्रमों के बारे में जानकारी में वृद्धि हुई है" में प्राप्त तथ्यों से यह सामने आता है कि सर्वाधिक 70.0 प्रतिशत लाभार्थी संबंधित पहलू से सहमत हैं। ततपश्चात् 25.8 प्रतिशत पूर्णत: सहमत हैं, जबकि 4.2 प्रतिशत असहमत हैं। प्राप्त परिणामों से स्पष्ट होता है कि सरकारी कार्यक्रमों से संबंधित लोगों में जागरूकता आयी है। संस्थान से संबंधित लाभार्थी सरकारी योजनाओं आदि से संबंधित कार्यों के प्रति जानकारी रखने लगे हैं।

21. सारणी के इक्कीसवीं पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से ग्राम-पंचायत स्तर के कार्यक्रमों में लोगों की भागीदारी में वृद्धि हुई है" में प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से सामने आता है कि सर्वाधिक 73.3 प्रतिशत लाभार्थी यह मानते हैं कि ग्राम-पंचायत स्तर पर भागीदारी बढ़ी है। ततपश्चात् 24.2 प्रतिशत इससे पूर्णत: सहमत हैं, जबकि मात्र 2.5 प्रतिशत लाभार्थी असहमत हैं। प्राप्त परिणाम साफ दर्शाते हैं कि लोगों की भागीदारी बढ़ी है। दीनदयाल शोध संस्थान से संबंधित लाभार्थियों में ग्राम-पंचायत स्तर पर विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेने के प्रति जागरूकता आयी है।

22. सारणी के बाइसवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से राजनैतिक प्रक्रिया में सुधार आया है" में प्राप्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 71.7 प्रतिशत लाभार्थी इससे सहमत हैं, जबकि 18.3 प्रतिशत पूर्णत: सहमत हैं, वहीं 9.2 प्रतिशत असहमत हैं तथा शेष 0.8 प्रतिशत ने कोई प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त की। प्राप्त परिणाम साफ दर्शाते हैं कि राजनीतिक

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

चुनावों की प्रक्रिया में सुधार आया है। दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा जब से अध्ययन क्षेत्र में कार्य प्रारंभ किए हैं, उसके बाद से अध्ययन क्षेत्र की राजनैतिक प्रक्रिया में सुधार आ रहा है।

23. सारणी के तेइसवें पहलू "संस्थान के हस्तक्षेप से सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन शैली में नए दृष्टिकोण में वृद्धि हुई है" में प्राप्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 68.3 प्रतिशत लाभार्थी इस पहलू से सहमत हैं, वहीं 22.5 प्रतिशत पूर्णत: सहमत हैं, जबकि 5.8 प्रतिशत असहमत हैं तथा शेष 3.3 प्रतिशत लाभार्थियों ने कोई प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त की है। प्राप्त परिणाम साफ दर्शाते हैं कि दीनदयाल शोध संस्थान से जुड़ने के पश्चात् लोगों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन शैली में नए दृष्टिकोण की ओर विश्वास बढ़ा है।

निष्कर्ष

दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों से अध्ययन क्षेत्र में निष्पक्ष अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में वृद्धि हुई है तथा वर्ग आधारित भेदभाव कम हुआ है। सामाजिक एवं धार्मिक आदि कुरूतियों एवं आडंबरों के प्रति लोग जागरूक हुए हैं तथा इन पर से लोगों का विश्वास कम हुआ है। सामाजिक समितियों एवं संगठनों में लोगों की भागीदारी बढ़ी है तथा लोग आपसी समन्वय एवं भाईचारे के साथ मिलकर कार्य करने के प्रति जागरूक हुए हैं। ग्रामीण स्तर पर लोग विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन एवं प्रतिभाग करते हैं। यह सकारात्मक पहलू के संकेत है; क्योंकि ग्रामीण परंपरा में सांस्कृतिक कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण कारक है, जिसके माध्यम से लोग समाज में एक दूसरे से जुड़कर अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को बचाए रखते है। ग्रामीण क्षेत्र में सदा से एक कमजोर पहलू के रूप में महिलाओं की शिक्षा रही है। जिसके लिए संस्थान द्वारा किए गए कार्यों से सकारात्मक बदलाव आया है। अब बालिकाएं भी अध्ययन क्षेत्र में अधिक संख्या में शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। पारिवरिक हिंसा एवं जेंडर समानता में बहुत अधिक नहीं लेकिन सुधार आने के संकेत प्राप्त होने लगे हैं। बाल विवाह लगभग- लगभग समाप्त होने की स्थिति के करीब हैं। दहेज जैसी समस्या अभी अध्ययन क्षेत्र में व्याप्त है यह एक कानूनी अपराध होने के बावजूद भी इसमें बहुत कम सुधार आया है जो

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

नकारात्मक स्थिति को स्पष्ट करती है। जातिवाद, संप्रदायवाद जैसी समस्याओं से लोग बाहर निकलकर अब आपसी सहयोग से अच्छे सामाजिक जीवन स्तर की तरफ अपने ध्यान को लगा रहे हैं। ग्रामीण संरचना की स्थिति पहले से बेहतर हुई है, लोगों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन शैली में परिवर्तन आया है। वर्तमान संदर्भ में नए दृष्टिकोण के साथ एक बेहतर जीवन यापन हेतु लोग सशक्त हो रहे हैं।

सुझाव :

1. दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा चित्रकूट प्रकल्प में सामाजिक सशक्तिकरण हेतु संचालित विभिन्न कार्यों की प्रासंगिकता को बनाए रखने हेतु उनकी कार्यशीलता में सातत्य एवं प्रभावोत्पादकता बनाए रखनी की आवश्यकता है।
2. बदलते सामाजिक परिवेश में दीनदयाल शोध संस्थान को अध्ययन क्षेत्र के परिस्थितियों के अनुसार सामाजिक सशक्तिकरण के स्वरूप में परिवर्तन कर उसे और अधिक कारगर बनाने की आवश्यकता है।
3. ग्रामीण स्तर पर संस्थान ने जो प्रारूप बनाया है उसको और अधिक विकेंद्रित कर स्थानीय सरकारी कर्मचारी एवं पंचायत आदि के सदस्यों के साथ मिलकर कार्यों को क्रियान्वित करने पर जो देना चाहिए।
4. संस्थान को अपने कार्यों की लगातार निगरानी एवं लाभार्थियों के सशक्तिकरण से संबंधित जो प्रयास किये गए हैं उनका मूल्यांकन करते रहने की आवश्कता है।
5. गाँव के स्तर पर लाभार्थियों के छोटे-छोटे समूहों को बनाकर उन्हें सशक्त करने का प्रयास करना चाहिए।

संदर्भ सूची

दीनदयाल शोध संस्थान. (*2014). विराट पुरूष : नानाजी देशमुख वांगमय (छ खंडो में).* नई-दिल्ली : प्रभात प्रकाशन.

पाण्डेय, अं. (मार्च, 2022). ग्रामीण विकास का दृष्टिकोण : नानाजी देशमुख. अधिगम शैक्षिक शोधपत्रिका, 22 (*1*) 90-102.

सिंह, धी. (2009). दीनदयाल शोध संस्थान के शैक्षिक कार्यों का गाँधी जी के शैक्षिक विचारों के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन. (पीएचडी शोध प्रबंध). *डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय* : फैजाबाद.

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पाण्डेय, अं. (2020). ग्रामीण स्वावलंबन एवं सामाजिक सशक्तिकरण : दीनदयाल शोध संस्थान, चित्रकूट प्रकल्प के संदर्भ में. (एम.फिल. लघु शोध प्रबंध). महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय : वर्धा.

कुमार, रा. (2020). *भारत रत्न नानाजी देशमुख.* नई दिल्ली : डायमंड पॉकेट बुक्स पब्लिकेशन.

ग्रामीण विकास मंत्रालय. (ND). *नानाजी देशमुख : सर्वांगीण ग्रामीण विकास के प्रति समर्पित एक जीवन.* नई दिल्ली : ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार.

शर्मा, म. (2017). पं. *दीनदयाल उपाध्याय कर्तृत्व एवं विचार*. नई-दिल्ली : प्रभात प्रकाशन.

चौहान, गौ. (2015). *नानाजी देशमुख जीवन दर्शन.* नई दिल्ली : अमरसत्य प्रकाशन**.**

दीनदयाल शोध संस्थान. (ND). *नानाजी की पाती युवाओं के नाम (पत्र- संकलन).* नई-दिल्ली : दीनदयाल शोध संस्थान.

दीनदयाल शोध संस्थान. (ND). *स्वावलंबन अभियान चित्रकूट.* नई- दिल्ली : दीनदयाल शोध संस्थान.

नामदेव, म. (2020). *ग्रामीण विकास का चित्रकूट मॉडल : नानाजी देशमुख प्रणीत.* नई-दिल्ली : नेशन प्रेस.

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies